International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थान के हाड़ौती की मीणा जनजाति का लोकोत्सव – हडूडा

डॉ. शिवकुमार मिश्रा
शोध पर्यवेक्षक
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास
राजकीय महाविद्यालय, शाहबाद, बाराँ

हंसराज मीणा
शोधार्थी

मीणा जनजाति राजस्थान के हाड़ौती के कोटा, बून्दी, झालावाड एवं बारां जिलों में मुख्य रूप से निवास करती है। हाड़ौती के बून्दी जिले के विभिन्न गांवों में मांगलिक अवसरों शादी–विवाह, तीज–त्योहार आदि पर विभिन्न प्रकार के लोकोत्सव का आयोजन किया जाता है। बून्दी जिले में मीणा जनजाति द्वारा किया जाने वाला एक प्रमुख लोकोत्सव हडूडा है। इस लोकोत्सव का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। बून्दी जिले के केशोराय पाटन के भीया गांव व नैनवा में किया जाने वाला हडूडा प्रसिद्ध है। हडूडा के अवसर पर आस–पास के गांवों से लोग इकट्ठा होकर इस लोकोत्सव का आनन्द उठाते हैं।

भीया का हडूडा

हडूडा शब्द डूई–डूई शब्दों से उत्पन्न हुआ माना जाता है। डूई–डूई शब्द कुश्ती करते वक्त बोले जाने वाले शब्द होते है। इन्हीं शब्दों के अपभ्रंश से हडूडा शब्द बनना बताया जाता है।

भीया बून्दी जिले के केशोरायपाटन कस्बे के नजदीक 6 किमी. दूरी पर स्थित एक गांव है। भीया में वर्तमान में करीब–करीब सभी जातियाँ निवास करती है। मीणा जाति भी इस गांव में निवास करती है। मीणा जनजाति वर्तमान में निवास कर रही जातियों में सबसे प्राचीन मानी जाती है। बून्दी में भीया का हडूडा प्रसिद्ध रहा है। इसकी शुरूआत 11वीं शताब्दी में होना बताया जाता है। इस गांव में गूजर–मीणा गौत्र के मीणा निवास करते हैं।

'भीया' गांव भौमिया राजपूत व गणगौरा जाटों का गांव था। मध्यकाल में लगभग 11वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इन राजपूतों का आतंक इतना बढ़ गया था कि आसपास के जितने भी गांव थे वे सब इनसे खोफ खाते थे। इन राजपूतों के डर से कोई इनके सामने बोलने की हिम्मत तक नहीं कर पाता था। इन सब बातों की शिकायत बून्दी दरबार में की गई। इस समय गूजर–मीणा जो कि गुजराती मीणा होने के कारण गूजर–मीणा कहलाएँ। इस बात की जानकारी गुजर मीणाओं के जागा से मिलती है। गूजर–मीणा अपने राजोरगढ़ में राज्य छीन जाने से बून्दी दरबार के पास आये और निवास उपलब्ध करवाने की बात कही।[1]

बून्दी दरबार ने तालेडा के पास घोडा पछाड नदी के किनारे स्थित पीपल्दा गांव में बसने की इजाजत दी। यह पीपल्दा गांव वर्तमान समय में हाडाओं का पीपल्दा के नाम से जाना जाता है। इन गूजर–मीणाओं के पास अपनी स्वयं की

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सेना भी होना बताया जाता है। ये स्वयं अपने राज्य राजोरगढ़ के छीन जाने से आये थे।

इस तरह बून्दी दरबार के द्वारा की गई मदद के बदले में भीया में बसे भौमिया राजपूतों को खदेड़ने का हुक्म बून्दी दरबार ने इन गूजर–मीणाओं को दिया। गूजर–मीणाओं ने भौमिया राजपूतों तथा गणगौरा जाटों पर हमला कर दिया, दोनों के मध्य भीया में तालाब के किनारे भयंकर युद्ध हुआ जिसमें भौमिया राजपूतों तथा जाटों को पराजित किया गया। इस युद्ध में अनेक व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हुए जिनकी पत्थरों की मृत मूर्तियां वर्तमान समय में भी पड़ी हुई है जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि इनकी संख्या आधा सैकड़ा तो निश्चित ही रही होगी।

मृत्यु को प्राप्त होने वाले व्यक्तियों के वंशज जो कि उस समय ही गांव छोडकर चले गये थे। वे अब भी पूजा अर्चना करने यहां आते रहते हैं। इनके प्रमाण खेतों के नाम से भी लगते है जिसमें खेतों के नाम भी उन्ही लोगों के नामों से पुकारे जाते है। मीणाओं के व्यक्ति भी इस युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हुए थे जिनकी पत्नी सती हुई थी। यह जलोदा गांव के जोनवाल गौत्र की बेटी थी। जलोदा गांव भी भीया से कोई 10–12 किलोमीटर के फासले पर ही स्थित है। मीणाओं ने राजपूतों को पराजित कर अपना नया निवास स्थान इस गांव को बना लिया। भीया गांव के व्यक्तियों ने अरनेठा से भोलूजी चोबे नाम के ब्राह्मण को यहां लाकर बसाया था। आज भीया में ब्राह्मण परिवारों की संख्या अच्छी है।

इस प्रकार से गूजर–मीणा व राजपूतों के बीच हुए युद्ध में विजयी होने की खुशी में हर साल उसी तिथि गणगौर के दिन हडूडा खेला जाता है। जिसमें उस जीत की खुशी को ताजा किया जाता है।[2]

हडूडा की शुरूआत में एक दिन पूर्व भूमि पूजन किया जाता है। शाम को जैसे ही एक डंक्या ढोल बजता है। लोग हडूडा स्थल पहुँचने लगते है, जहां पर भूमि पूजन करके कुश्ती के लिए जोडियाँ बनायी जाती है और इस दिन भूमि पूजन व जोडियाँ बनाने का काम बाबा रामदेव मंदिर में होता है।[3] राव ढोल बजाकर हडूडा का संकेत देता है। लोग आकर जमा होने लगते है। लोग अपनी–अपनी पसंद की जोडियों के साथ भाग लेते है। यहाँ से ये सभी लोग भूमि पूजन स्थल पर जाते हैं। इस हडूडा में भाग लेने के लिए आस पास के 12 गांव शामिल होते हैं। इन गांवों के नाम जगन्नाथ, बालिता, नीमोठा, खेडली, जागरूण्ड, सुखसागर, बिरज, नौताड़ा, समदपुरिया, रंगराजपुरा, माधोराजपुरा और भीया हैं। भीया में स्थित महादेवजी के मंदिर में इन 12 गांवों से उगाही करके अनाज एकत्रित किया जाता है। इस अनाज से गुरू पूर्णिमा पर भण्डारा किया जाता है। ये वही गांव हैं जिन्होंने भौमिया राजपूतों के विरूद्ध एकत्रित होकर शिकायत की थी।[4]

इन सभी गांवों के लोग इस दिन एकत्रित होकर हडूडा की शोभा बढ़ाते हैं। सभी इकट्ठा होकर आतंक से मुक्ति की झलक वर्तमान में भी नकली कुश्ती/युद्ध को देख कर पाते है। इस बनावटी कुश्ती को करने के लिए लोग जोडियाँ बना लेते है। लोगो द्वारा बनाई गई ये जोडियाँ कुश्ती लड़ती है। ये कुश्ती आपस में रोमांच व उत्साह बढ़ाती है। एक ढंक्या ढोल बजाया जाता है। समस्त गांव के व्यक्ति, बच्चें, बडे बूढ़े सब आनन्द लेने के लिए एकत्रित होते है। कुश्ती लड़ने वाले व्यक्ति पहलवानों के जैसे बनावटी संकेत देते है। लोग सीने को ठोककर कुश्ती करने के लिए सामने वाले को आमंत्रित कर उकसाते है। कुश्ती लड़ने वालो के मुँह से ड् ड् डूई की आवाज लोगों को प्रेरित करती है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बच्चे, बुजुर्ग और युवा सभी अपनी भुजाओं को फटकारते हुए अपनी मूछों को तांव देते हैं और अपनी जोडी के पहलवान के साथ कुश्ती करते हैं। महिलाएँ गीत गाती हुई हडूडा जूलुस के पीछे–पीछे चलती है। हडूडा में कुश्ती करते क्या बड़े, क्या बुजुर्ग, कौनसे युवा सब हडूडा के चौक पर ड् ड् डूई की आवाज के साथ कूद पड़ते हैं। इस लोकोत्सव में सभी उम्र के बड़े–बुजुर्ग व बच्चे सब भाग लेते हैं। छोटे बच्चों में इतना उत्साह होता है कि कुश्ती स्थल पर इन्हें छोटे होने के कारण जगह नहीं मिलती है तो ये कम उम्र के बच्चे भी एक तरफ होकर कुश्ती की जोर आजमाइश करते हैं। बच्चे तो इस प्रकार कुश्ती करते हुए लोट पोट हो जाते है कि उन्हें मिट्टी से सन जाने के बाद पहचानना भी कठिन हो जाता है। धूल मिट्टी से सने कपड़े और पसीने से तर–बतर तन ऐसा लगता है कि शरीर पर पानी उडेल कर उस पर मिट्टी–धूल आदि डाले गये हो।

कुश्ती करने वाली जोडियां हडूडा के चोक पर अपना करतब दिखाने के लिए मूछों पर बल देती हुई ऐसी आती है कि एक बार तो ऐसा लगता है जैसे एक दूसरे को पछाड कर धूल चटा देंगे। कुश्ती करने वाले अपनी भुजाओं को इस प्रकार फटकारते है कि दाये हाथ से बायी भुजा को व बाये हाथ से दायी भुजा को पीटते हुए एक दूसरे की ओर बढ़ते है और आपस में एक दूसरे की भुजाएँ पकड़कर जोर आजमाइश करते है। कभी–कभी तो इस प्रकार से भी कुश्ती लडते है कि एक हाथ जमीन दूसरा हाथ मूंछों पर होता है तो गर्दन एक दूसरे से भिडी हुई होती है। कुछ लोग कुश्ती लड़ने वाली जोड़ियों के कंधें पीट–पीट कर उन्हें दाद देते है और उनकी ताकत व मजबूती की सराहना करते है तो कुछ उन्हें कुश्ती के लिए उकसाते है।

दो व्यक्ति जब कुश्ती कर रहे होते हैं तो कुछ इनके चारों ओर गोल–गोल घूमकर अपनी भुजाओं को पीटते रहते है और अपने जोड़ीदार को कुश्ती के लिए तैयार रहने की उत्प्रेरणा देते है। कभी–कभी ऐसा देखने में आता है कि दो पहलवान जब कुश्ती कर रहे होते है तो कोई अन्य लड़ाका बीच–बीच में आकर उनसे कुश्ती करने के लिए ललकारता है। कभी–कभी कुश्ती करने वाले पहलवानों की टांगों में टांगे फसाकर उन्हें गिराने का प्रयास करते हैं। ज्यों–ज्यों इक डंक्या ढोल की तान बढती जाती है वैसे–वैसे पहलवानों की जोड़ियाँ कुश्ती के मैदान में कूदती है और हडूडा का पारा चढ़ने लगता है। पहलवान एक दूसरे से कुश्ती करते करते इतने जोशीले हो जाते है कि उन्हें यह भी कतई डर नहीं रहता कि कई चोट लग सकती हैं। वे तो बस टूट पडते है और एक दूसरे को चित करने का जोश लिए कुश्ती लड़ते जाते हैं।

पहलवानों की कमर पर बंधी साफी व सिर पर बंधा रूमाल या साफी ऐसी प्रतीत होती है जैसे कि वे कुश्ती में एक–दूसरे को चित करने में शहीद होने वाले हो। कभी–कभी तो चार–चार पहलवान दोनों हाथो व पैरों के सहारे जमीन पर इस प्रकार आडे हो जाते है और बीच–बीच में एक हाथ से अपने सीने को ठोकते जाते है। मुँह से ड् ड् डूई की आवाज करते जाते हैं। दो पहलवानों की कुश्ती इस प्रकार से भी देखने में आई है जिसमें एक दूसरे का हाथ पकड़ रखा हो और एक पहलवान ने दूसरे के पैर को दबा रखा हो, आगे यह पहलवान एक दूसरे की ताकत का अन्दाजा लगाकर दाव पेच लगाते है। ऐसा भी देखने में आया है कि एक पहलवान तो अन्य पहलवानों के कंधे तक चढ़ जाता है और कंधो पर खड़ा होकर अपनी मूंछों को बल देता है तो कभी अपनी भुजाओं को ठोकता है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महिलाएँ लाल–पीले कपड़े पहन कर इस हडूडा को देखने आती हैं। सभी महिलाएँ हडूडा की कुश्ती में उत्साह बढ़ाती नजर आती हैं। रंगीन कपड़ों में सारा हडूडा चोक रंगीन नजर आता है। कुछ महिलाएँ गीत गाकर हडूडे की परम्परागत सांस्कृतिक विरासत का बखान करती है।

गांव में ऐसी मान्यता है कि इस कुश्ती में सिर्फ गांव की बनी हुई जोड़ियाँ ही भाग लेती है और वे भी एक दिन पूर्व ही तय हो जाती है। गांव के बाहर के व्यक्ति को इस कुश्ती में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती है। इस परम्परा को प्राचीन समय से ही निभाया जा रहा है। आज होने वाली कुश्ती तो सिर्फ प्राचीन समय पर होने वाली वास्तविक कुश्ती का नकली नाट्य मात्र है ताकि यह परम्परा हमेशा चलती रहे।

एक बार इसी तरह से गणगौर के अवसर पर गांव में कुश्ती का आयोजन था तब कोटा नांता के जैठामल पहलवान भी इस गांव की कुश्ती में भाग लेने चले आये थे। गांव वालों ने जैठामल के बाहर के होने के कारण कुश्ती में शामिल नहीं होने दिया था। तब इस पहलवान ने गांव वालो को कुश्ती के लिए ललकारा और कहा कि इस गांव में मुझसे लड़ने लायक कोई पहलवान नहीं है इसलिए मुझे कुश्ती में शामिल नहीं होने दे रहे हो, तभी इस गांव के भगवान जी चौबे पहलवान ने चुनौती को स्वीकारते हुए जैठामल से कुश्ती की जिसमें जैठामल कुश्ती के दौरान मारा गया था। तब से इस गांव की कुश्ती का महत्व और बढ़ गया।[5]

पहले पूरे गांव में एक ही हडूडा का आयोजन होता था। लेकिन हडूडा को लेकर हुए विवाद के बाद ब्राह्मण समाज व मीणा समाज का अलग–अलग हडूडा मनाने लगे।[6]

गांव में इसी दिन शिव पार्वती के विवाह की रस्म भी निभाई जाती है जिसमें मीणा जनजाति की महिलाएँ व अन्य समाज की महिलाएँ रंगीन पोशाक पहनती हैं और शिव पार्वती जी के विवाह को सम्पन्न कराती है। इस विवाह की तैयारी के बाद से प्रारम्भ की जाती है। यह कार्य गणगौर के 15 दिन पूर्व प्रारम्भ किया जाता है। एक पक्ष शिवजी का तथा दूसरा पक्ष पार्वती जी का होता है। 15 दिन तक महिलाएँ इनके विवाह की सभी रस्में पूरी करती हैं। रोजाना गीत गाये जाते हैं। चने भिगोकर बांटे जाते है। यह गीत गाने की प्रकिया विवाह सम्पन्न होने तक रोज की जाती है। रात में महिलाएँ विभिन्न स्वांग रचकर अनेक प्रकार के नाट्य भी प्रस्तुत करती है। गणगौर के दिन सभी गांव की महिलाएँ सुन्दर वस्त्र पहन कर सौन्दर्य करती हैं। इस दिन सभी महिलाएँ सामूहिक रूप से गणगौर की पूजा करती है।

पूजा के बाद शिवजी की बारात लेकर पार्वती जी को परनने के लिए जाते है जिसमें महिलाएँ गीत गाती जाती हैं। साथ में ढोल बजाते हुए ले जाते है तथा पार्वती जी के यहाँ तोरण मारा जाता है और शिवजी व पार्वती के विवाह को सम्पन्न किया जाता है। पार्वती जी को विवाह करके शिवजी के घर लाया जाता है।[7]

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भीया में हड़ूडा का एक दृश्य

नैनवा का हड़ूडा

बून्दी जिले के नैनवां कस्बे में भी हड़ूडा मनाया जाता है। इस लोकोत्सव में मीणा जनजाति के साथ अन्य जातियाँ भी भाग लेती है। यह हड़ूडा यहाँ पर हर वर्ष धुलंडी पर मनाया जाता है। धुलंडी के दिन सभी लोग बड़े उत्साह से इस लोक नाट्य में भाग लेते हैं। नैनवां में मनाया जाने वाला यह हड़ूडा लगभग 150 वर्षों से चला आ रहा है। इस दिन राजा मालदेव मालदेवकी के विवाह को सम्पन्न कराया जाता है। इस हड़ूडा की महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें सिर्फ पुरूष ही भाग लेते है अर्थात यह एक पुरूष प्रधान लोक पर्व है। इसमें महिलाओं के प्रवेश पर रोक होती है। इस हड़ूडे को मनाने के लिए लोग दो वर्गों में बंट जाते हैं। एक राजा मालदेव की बारात में शामिल होते है तथा दूसरा वर्ग रानी मालदेवकी के विवाह की तैयारी कर विवाह सम्पन्न कराता है।[8]

बारात में फुहडता बहुत ज्यादा होती है। पूरा नैनवां कस्बा दो भागों में बट जाता है। आतिशबाजी के साथ दोनो ओर की बारातें पहुँचते ही हड़ूडा में अश्लील व फुहडता के प्रदर्शन की होड़ लग जाती है। 'बहारों फूल बरसाओं मेरा महबूब आया है' गीत के साथ हड़ूडा की रस्म सम्पन्न होती है। आयोजन को पूरा करने के लिए उत्तर दिशा में बसे लोग कस्बे का नायक मालदेव व दक्षिण दिशा में बसे नायिका के पक्ष में रहते हैं। सायं 5 बजे नायक मालदेव की बारात आतिशबाजी के साथ रवाना होती है। नायक ऊँट पर बैठकर झण्डा लेकर चलता है जिसके पीछे जनजाति के पुरूष अन्य पुरूषों के साथ नृत्य करते हुए चलते हैं। वहीं दूसरी ओर सवा 5 बजे के लगभग नायिका मालदेवकी के पक्ष की बारात का जूलुस रवाना होता है। फुहड गीतों के साथ दोनों बारातें झण्डे की गली पहुँचती हैं। वहाँ पर हड़ूडा को देखने के लिए सम्पूर्ण शहर उमड़

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-0558
Impact Factor: 7.119Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पड़ता है। दोनों ही पक्षों के लोग झोली में रखकर पताशें व फूल्या लुटाते हुए चलते हैं। लोक कलाकार होली के गीत गाकर इस लोकोत्सव की शोभा बढ़ाते हैं।

इसमें दोनों पक्ष एक दूसरे पर फूल्या व पताशें लुटाने की परम्परा को निभाते हैं। कभी–कभी दोनों पक्षों के लोग पगडियां भी बांधते हैं। बाद में इन पगडियों को भी एक दूसरे के ऊपर उछालते हैं। कुछ लोग चिल्ड्रन बैंक वाले नोट लुटाते हैं। कभी–कभी जलेबियाँ भी एक पक्ष दूसरे पक्ष पर फेकते हैं। वर्तमान में दोनों पक्ष एक दूसरे पर पटाखे भी फेंक देते हैं। पटाखों से लोकोत्सव में भगदड़ भी मच जाती है। नैनवां की लोक संस्कृति का परिचय कराता यह हडूडा आपसी भाईचारे का पाठ भी पढ़ाता है, साथ ही एक दूसरे के साथ मिलकर रहने को प्रेरित भी करता है।[9] इसमें नैनवां के आस पास बसे जनजाति के लोग बडे ही उत्साह से भाग लेकर लोकोत्सव की शोभा बढ़ाते हैं।

भीया में हडूडा का एक दृश्य

सन्दर्भः–

1. श्री मोहन लाल जी जागा, गांव कैथून जिला कोटा (राजस्थान) हाल निवास डकनिया (कोटा) से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी
2. उपर्युक्त
3. राजस्थान पत्रिका, बून्दी अंक, 8 अप्रैल 2019, पृ. 11
4. श्री गोपाल जी मीणा (पटेल) गांव भीया, तह. केशोराय पाटन, जिला बून्दी (राजस्थान) से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी
5. श्री रामप्रसाद जी मीणा गांव भीया, तह. केशोराय पाटन, जिला बून्दी (राजस्थान) से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी
6. राजस्थान पत्रिका, बून्दी अंक, 9 अप्रैल 2019, पृ. 12
7. श्रीमती रोड़ी बाई पत्नी श्री गोपाल जी पटेल गांव भीया तह. केशोराय पाटन जिला बून्दी (राजस्थान), से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी

श्रीमती कैलाश बाई पत्नी स्वर्गीय श्री छीतर लाल जी मीणा,गांव भीया तह. केशोराय पाटन जिला बून्दी (राजस्थान), से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी

श्रीमती गोबरी बाई पत्नी श्री बृजमोहन जी मीणा,गांव भीया तह. केशोराय पाटन जिला बून्दी (राजस्थान), से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी

श्रीमती भंवरी बाई पत्नी श्री गोपाल जी मीणा,गांव भीया तह. केशोराय पाटन जिला बून्दी (राजस्थान), से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी

श्रीमती मोड़ी बाई पत्नी श्री रामस्वरूप जी मीणा, गांव भीया तह. केशोराय पाटन जिला बून्दी (राजस्थान), से हुई वार्ता एवं प्राप्त जानकारी

8. दैनिक भास्कर, कोटा संस्करण, 20 मार्च 2019, पृ. 6
9. राजस्थान पत्रिका, बून्दी अंक, 23 मार्च 2019, पृ. 10